

विषय: Subaltern History (उपवंचित इतिहास)

♦ 1. परिचय

“Subaltern” शब्द का अर्थ है — ‘अधीन’, ‘निम्न’ या ‘हाशिए पर रखा गया वर्ग’। इतिहास के अध्ययन में यह दृष्टिकोण उन समूहों के अनुभवों और दृष्टियों को सामने लाने का प्रयास करता है जिन्हें परंपरागत इतिहासकारों ने नज़रअंदाज़ किया — जैसे किसान, मजदूर, महिलाएँ, आदिवासी, निम्न जातियाँ और अन्य हाशिए पर स्थित समुदाय।

♦ 2. उत्पत्ति और पृष्ठभूमि

Subaltern Studies की शुरुआत 1980 के दशक की शुरुआत में भारत में हुई। इस आंदोलन के सूत्रधार थे रणजीत गुहा (Ranajit Guha)। उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक इतिहासलेखन और भारतीय राष्ट्रवादी इतिहास दोनों की आलोचना की — क्योंकि दोनों ही “शासकों” या “एलीट वर्ग” के दृष्टिकोण से इतिहास लिख रहे थे।

♦ 3. प्रमुख उद्देश्य

1. इतिहास में जनता की आवाज़ को स्थान देना।
2. औपनिवेशिक और राष्ट्रवादी दोनों इतिहासों में निहित एलीट प्रभुत्व को चुनौती देना।
3. यह दिखाना कि भारत का इतिहास केवल शासकों का नहीं, बल्कि साधारण जनता के संघर्षों और चेतना का भी इतिहास है।

♦ 4. प्रमुख इतिहासकार

Subaltern Studies समूह के प्रमुख सदस्य:

Ranajit Guha – Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India

Gayatri Chakravorty Spivak – “Can the Subaltern Speak?”

Partha Chatterjee – Nationalist Thought and the Colonial World

Dipesh Chakrabarty – Provincializing Europe

Shahid Amin, David Hardiman, Gyanendra Pandey, आदि।

♦ 5. मुख्य विशेषताएँ

इतिहास में “नीचे से देखने” (History from Below) की प्रवृत्ति।

उपनिवेश और राष्ट्रवाद की प्रक्रिया में आम जनता की सक्रिय भूमिका को पहचानना।

संस्कृति, धर्म, जाति और स्थानीय परंपराओं के महत्व पर जोर।

पश्चिमी “Modernity” की आलोचना और स्थानीय अनुभवों की वैधता की स्वीकृति।

♦ 6. आलोचनाएँ

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि सबाल्टर्न अध्ययन अत्यधिक सैद्धांतिक हो गया है।

ग्रामीण समाज के बजाय यह बौद्धिक विमर्श पर केंद्रित होता चला गया।

मार्क्सवादी इतिहासकारों ने कहा कि इसमें वर्ग विश्लेषण की कमी है।

नारीवादी दृष्टि से, उपवंचित इतिहास में भी महिलाओं की भूमिका सीमित रूप में दिखी है।

♦ 7. महत्व

Subaltern Studies ने भारतीय इतिहासलेखन में एक नई दिशा दी —

इसने बताया कि औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जन आंदोलनों और स्थानीय चेतना की भी अपनी राजनीति थी।

इसने इतिहास में बहु-स्वरता (plural voices) को मान्यता दी।

यह दृष्टि आज सांस्कृतिक अध्ययन, नारीवाद, और पोस्ट-कोलोनियल सिद्धांत तक फैली हुई है।

♦ 8. निष्कर्ष

Subaltern History ने इतिहास को सत्ता-केंद्रित दृष्टिकोण से मुक्त किया और समाज के उस हिस्से को आवाज़ दी जो सदियों से मौन था।

यह न केवल इतिहास की पुनर्व्याख्या है, बल्कि इतिहास लिखने के तरीके की क्रांति भी है।